



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पञ्जाब केशरी	20.02.23	3	1-5

# 'जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए करने होंगे कई बदलाव'

## जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम-आदमी भी प्रभावित : प्रो. काम्बोज

हिसार, 19 फरवरी (राठी): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एम.डी. डॉ. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो जलरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिसमें हाल ही में विकसित गेहूँ, मक्का, गन्ना, राया, बायोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फलबारीन की किस्में शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधकरण अपना, क्लाइमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, प्रिशिजन खेती, मार्टीफिशियल इंटेल्जिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल, जिसमें कृषि एवं पशुपालन के संदर्भ में उत्पादकता को बनाए रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा।



स्विट्जरलैंड के वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एस.के. पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर कोमेंटो व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए।

### कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत : डा. मेनफेर्ड

आई.सी. एंड सी.सी. जर्मनी के एम.डी. डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं को मदद है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी।

ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों को नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है।

### वैज्ञानिकों की राय

जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसमें मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे बर्फबारी का कम होना, सूखापन, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। वैज्ञानिकों ने कई सुझाव सम्मेलन में दिए हैं।

- ▶ जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए जंगली या पारंपरिक बीजों का नई तकनीक के साथ इस्तेमाल करना होगा। फसलों की जंगली व देशी किस्मों में रोग प्रतिरोधक क्षमता व मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव से लड़ने की शक्ति होती है।
- ▶ सूक्ष्म जीव ग्रीन हाऊस गैसों को कम करने व दूधित पानी को स्वच्छ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
- ▶ दलहनीय फसलें वातावरण के संतुलन को बनाए रखने में बहुत उपयोगी हैं। ये फसलें वातावरण से नाइट्रोजन को लेकर पीछा तक पहुंचाती हैं और सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ाकर मिट्टी की गुणवत्ता को बनाए रखने में मददगार साबित होती हैं।
- ▶ जिस प्रकार से मौसम में बदलाव हो रहा है उसको देखते हुए कम तापमान की फसलों की ओर ध्यान देना होगा।
- ▶ कृषि में जीवाश्म आधारित ईंधन की बजाय जैव व पादप आधारित ईंधनों के इस्तेमाल को अपनाना होगा। इससे ग्रीन हाऊस गैसों को कम करने में मदद मिलेगी।
- ▶ अप्रत्याशित मौसम का बदलाव फसलों के लिए बहुत ही हानिकारक साबित हो रहा है। इसलिए कार्बन का संरक्षण व दूरदर्शी योजना बनाकर जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटा जा सकता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक जागरण

20.02.23

3

2-5

### जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आमजन प्रभावित

जागरण संवाददाता, हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस दौरान मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आइसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डा. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है।

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं। जिसमें हाल ही में विकसित गेहूँ, मक्का, गन्ना, राया,



उज्बेकिस्तान की वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज। • पी.आर.ओ.

बायोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फावाबीन की किस्में शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के आर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाइमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपक सिंचाई, आर्टिफिशियल

इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल जिसमें कृषि एवं पशुपालन के संदर्भ में उत्पादकता के बनाए रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में अधिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा। आइसी एंड सीसी जर्मनी के

एमडी डा. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदद है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों को नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है। सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डा. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डा. एसके पाहुजा ने सम्मेलन की रिपोर्ट प्रस्तुत की। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. केडी शर्मा ने अतिथियों का आभार जताया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

अज्ञात 3 जून 2023

20.02.23

2

6-8

### जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से बचने के लिए अपनानी होगी एकीकृत कृषि प्रणाली : प्रो. कांबोज

एचएयू में चल रहे अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किए गए एक हजार से अधिक शोध पत्र  
माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर चल रही तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का रविवार को समापन हुआ।

सम्मेलन में एक हजार से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। 12 विषयों पर विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यान दिए। समापन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली पर जोर दिया।

रविवार को विश्वविद्यालय के इंदिरा गांधी ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मेलन में कुलपति ने कहा कि जलवायु परिवर्तन खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर किसानों की आय पर पड़ता है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जल



एचएयू में सम्मेलन में स्विट्जरलैंड की वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति। सहाय

उपलब्धता पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं। हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण इस्तेमाल पर ध्यान देना होगा। कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा।

विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने कहा कि पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। सम्मेलन से अगले 50 वर्षों तक की कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का

संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों की नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एमके पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दूर भूमि	20.02.23	4	3-8



हिसार। सुरेन्द्र रोमियो व राधिका मोर और विद्यार्थियों ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ व उज्जबकिस्तान की वैज्ञानिक को सम्मानित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

फोटो: हरिभूमि

## कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन की जरूरत

हिसार। हकूवि में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा व स्थिरता विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का सम्पान हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे। आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदद है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों

में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध छात्रों को नैतिकता व ईमानदारी के साथ किसानों के हित में काम करने की प्रेरणा मिलती है। एचएयू के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है। इसके दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक

तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापत्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम फसलें विकसित करें।

### निदेशक ने सम्मेलन की रिपोर्ट पेश की

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एसके पाहजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर वोटों व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। अंत में स्नातकोत्तर अध्यायाता डॉ. के.डी. शर्मा उपस्थित रहे।

### देशी गाणों पर विदेशी नेहगाणों ने लगाए तुमके

विदेशी से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से सबूत करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवेंट कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी नेहगाणों ने जर्मनी के एडुयार्ड हॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र अक्कर, स्वीडन की डॉ. क्रोमिका खाना, फिनलैंड के डॉ. तुक्कर, आस्ट्रेलिया के डॉ. न्यूकॉर्ट, डॉ. ए.के. जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक शर्मा सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने देते जंगरी का व देशी गाणों पर जमकर तुमके लगाए, जिसपर तारियों की गडगड़हाट के साथ अभिरुचि रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

अज्ञीत समाचार

20-02-23

5

3-6

## जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम-आदमी भी प्रभावित : प्रो. काम्बोज

जर्मनी के वैज्ञानिक डॉ. मेनफेर्ड ने कहा कि कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत

हिसार, 19 फरवरी (विरेद वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्यातिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न मौजूद रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिसमें हाल ही में

विकसित गेहूँ, मक्का, गन्ना, राया, बॉयोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फाबाबीन की किस्में



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज उज्बेकिस्तान के वैज्ञानिक को सम्मानित करते हुए।

शामिल है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा के ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाइमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, प्रिंशिजन खेती, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन

का इस्तेमाल भी शामिल है। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हमें प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण

इस्तेमाल जिसमें कृषि एवं पशुपालन के संदर्भ में उत्पादकता के बनाए रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में आर्थिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाना होगा।

आईसी एंड सीसी जर्मनी के

एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदद है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एस्के पातुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मलेन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर बोर्मेटो व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक 20-02-23	20-02-23	8	4-5

## अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन संपन्न

### जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम आदमी भी प्रभावित : कुलपति

हिसार, 19 फरवरी (बिस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर 3 दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के समापन पर बोलते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा है, जिसका असर आम आदमी पर भी पड़ने लगा है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न भी मौजूद थे।

कुलपति ने बताया कि जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसी किस्में विकसित कर रहे हैं, जो तापरोधी, रोगरोधी व कम जलापूर्ति पर भी पोषण से भरपूर व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिसमें हाल ही में विकसित गेहूं, मक्का, गन्ना, राया, बीयोफोर्टीफाइड बाजरा, ज्वार, जई, मटर, चना व फाबाबीन की किस्में शामिल हैं।

जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाए रखने के लिए मृदा

के ऑर्गेनिक कार्बन को बढ़ाना, फसल अवशेषों को जलाने की बजाय खेत में ही मिलाना, फसल विविधिकरण अपना, क्लाईमेट स्मार्ट तकनीक जिसमें टपका सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, प्रिशिजन खेती, आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, लेजर लेवलिंग, जीरो टिलेज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है।

आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदद है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एस्के पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथिगणों का धन्यवाद ज्ञापित किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दैनिक भास्कर

दिनांक

20.02.23

पृष्ठ संख्या

3

कॉलम

3-5



अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के समापन समारोह के अवसर पर संबोधित करते एचअरयू के कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज।

## डॉ. मेनफेर्ड बोले-कृषि शोध को दूरदर्शी विज्ञान की जरूरत

कुलपति बोले-जलवायु परिवर्तन खाद्यान्न उत्पादन को कर रहा प्रभावित

भास्कर न्यूज़ | हिसार

गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता जरूरी

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का रविवार को समापन हो गया।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे व विशिष्ट अतिथि आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न आदि उपस्थित रहे।

कुलपति प्रो. बी.आर काम्बोज ने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों की आय व खाद्यान्न उत्पादन को सीधा प्रभावित कर रहा

आईसी एंड सीसी जर्मनी के एमडी डॉ. मेनफेर्ड कर्न ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदद है। पिछले वर्षों के मुकाबले भारत में कृषि शोध के क्षेत्र में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विज्ञान की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसी कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिनसे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज की उपलब्धता खाद्यान्न व चारे की सुरक्षा व स्थिरता के लिए बेहद जरूरी है।

है, जिसका असर आम आदमी पर भी पड़ने लगा है।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एस्के पाहुजा ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मेलन में

प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विशेषज्ञों की कमेटी द्वारा मूल्यांकन के आधार पर मोमेंटो व प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। अंत में स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. केडी शर्मा ने उपस्थित अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच दस	19.02.2023	-----	-----

## कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत : डॉ. मेनफेर्ड

पांच दस स्पृ

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और निर्यात' विषय पर 3 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का समापन हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोजे जी व विशिष्ट अतिथि डॉ. मेनफेर्ड जी ने संक्षेप रूप से अपने-अपने संबोधन प्रस्तुत किए।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोजे ने बताया कि 'जलवायु परिवर्तन विपत्तियों को आग व सूखा जैसी दुर्घटनाओं को रोकना प्रथम प्राथमिकता बन रहा है, जिसका असर आम-आदमी पर भी पड़ने लगा है। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार ऐसे विद्यमान विकसित कर रहे हैं, जो तापमान, जलवायु व अन्य प्रभावों पर भी ध्यान से धारण व अधिक पैदावार देने में सक्षम हैं, जिससे हमें ही में विकसित गेहूँ, मक्का, तिल, राई, बीजोत्पादक बाजरा,



जवा, जई, मटर, चना व पसलियों को विकसित कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों से निपटने के लिए व भूमि की उर्वरता को बनाए रखने के लिए मृदा के अद्वितीय कार्बन को बढ़ाए, फसल आकारों को बढ़ाने की बजाय खेत में ही निर्यात, फसल विकसितकरण, अंतर, क्लाइमेट स्मार्ट

संज्ञके जिसमें टपका सिंचाई, फसल सिंचाई, प्रिजिनन सोल्टी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग, मेजर लेक्टिव, जीके टिलीज व ड्रोन का इस्तेमाल भी शामिल है। जलवायु परिवर्तन से दुष्प्रभाव से बचने के लिए हम प्रकृतिक संसाधनों के निरंतरपूर्ण इस्तेमाल जिसमें कृषि एवं पशुधन के

संदर्भ में उदाहरण के बजाय रखने हेतु व कृषि क्षेत्र में अधिक सुरक्षा को बनाए रखने हेतु एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाया गया। डॉ. मेनफेर्ड जी ने बताया कि कृषि विज्ञान, सभी विज्ञान शाखाओं की मदद है। पिछले वर्षों के मुकामों पर हमें कृषि शोध के क्षेत्र

में सुविधाएं काफी बढ़ी हैं। कृषि शोध को लेकर दूरदर्शी विजन बनाने की जरूरत है। इस सम्मेलन में अगले 50 वर्षों में कृषि शोध के लिए योजनाएं बनाने में मदद मिलेगी। ऐसे कृषि पद्धतियां अपनाने की जरूरत है, जिससे प्रकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में मदद मिले। गुणवत्तापूर्ण बीज को उपलब्धता सुनिश्चाना व खेत की सुरक्षा व मिश्रण के लिए बेहतर तकनीकें। ऐसे सम्मेलन में भाग लेने से शोध क्षेत्रों को वैश्विकता व इंटरनेट के साथ किसानों के लिए व बचत करने की प्रेरणा मिलती है।

सम्मेलन में अनुसंधान निदेशक डॉ. नीलम साहू ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. एमके साहूजी ने सम्मेलन की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर सम्मेलन में प्रस्तुत होने वाले शोध पत्रों को विकसित की समेती द्वारा प्रकाशन के आधार पर कोमेटी व प्रकृतिक-पत्र प्रदान किया। उन में मन्तव्योत्तर अधिकांश डॉ. के.डी. साहू ने उत्तीर्ण अतिथियों का अत्यंत आभार व्यक्त किया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दैनिक भास्कर

दिनांक

20.02.23

पृष्ठ संख्या

2

कॉलम

1-4

**अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन:** एचएयू में भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कल्चरल इवनिंग

# देशी गानों पर झूमे विदेशी मेहमान

सिटी रिपोर्टर | एचएयू में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि कॉलेज के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवनिंग इवेंट आयोजित की। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्र, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पोलैंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्वाकांत, डॉ. एके जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य



वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने डोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़ाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने उत्साह बढ़ाया। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों



ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मनमोह लिया। कलाकारों ने कल्पक, सूफी, भंगड़ा, फोक इंडियन डांस, रागिनी

की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक जागरण

20.02.23

2

1-4

### विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

जागरण संवाददाता, हिंसार : हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता विषय पर मंथन चल रहा है। इससे विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवेंट कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बार्नर व डा. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्यर, स्वीडन की डा. मोनिका बाणा, पोलैंड के डा. लुकाज, आस्ट्रेलिया के डा. सूर्याकांत, डा. एके जोशी, अमेरिका के डा. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने डोल जगीरो दा व देशी गानों



हकूथि में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते दिखायीं। • जागरण

पर जमकर ठुमके लगाए। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की

शुरुआत की। इसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कथक, सुप्ती, भोंगड़ा,

फाक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात तथा हरियाणा की संस्कृति से रूबरू कराया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केशरी	20.02.23	3	1-2

### हकृवि में आयोजित कल्चरल ईव में देशी गानों पर झूमे विदेशी मेहमान

हिसार, 19 फरवरी (राठी): हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंचन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में कल्चरल ईव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉनर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्बर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पोलैंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के. जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने डोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर

दुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़हाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।



लोकल गानों पर नाचते विदेशी मेहमान व अन्य।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सजीत समाचार	20-02-23	5	6-8

**अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन : हकृति में आयोजित कल्चरल इव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए तुमके**

हिसार, 19 फरवरी (विरेंद्र वर्मा): हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्र, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पौलैंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के. जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने डोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर तुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़हाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंच वेद	19.02.2023	-----	-----

### हकृवि में आयोजित कल्चरल ईव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्र, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पोलैंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के. जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने ढोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके



लगाए, जिस पर तालियों की गडगड़हाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया। विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कथक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

हिन्दु स्थान समाचार

19.02.2023

-----

-----

| हिंसार: एचएयू में आयोजित कल्चरल ईव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए ठुमके

19 Feb 2023 180454



19 Feb 23

पूर्व से 5

जाए हुए

समाचार



19 Feb 23

सर्दीदार

समाचार

समाचार



19 Feb 23

सर्दीदार

समाचार

समाचार

भारतीय संस्कृति में शक्ति का प्रदर्शन के लिए किया सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

हिंसार, 19 फरवरी (दि.स.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि में प्राथमिकता और विधिवत विधायक पर प्रभाव डाला गयी विदेशों में आयोजितियों को भारतीय संस्कृति में शक्ति का प्रदर्शन के लिए कृषि विश्वविद्यालय के ऑडिटरियम में आयोजित कृषि कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों ने भारतीय के संस्कृतियों और वही प्रदर्शित करने के दो रीति-रिवाज प्रदर्शन की दो अलग-अलग प्रस्तुतियां कीं। कार्यक्रम के दो मुख्य भागों में एक अलग-अलग अंग्रेजी के दो अलग-अलग भागों में प्रदर्शन हुआ। दो देशी गानों पर प्रदर्शन हुआ। जिस पर भारतीय की संस्कृतियों के साथ अंग्रेजी में प्रदर्शितियों में एक और एक और विधायक कार्यक्रम का प्रदर्शन हुआ।

विश्वविद्यालय और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के संस्कृतियों में प्रदर्शितियों की दो रीति-रिवाज कर कार्यक्रम की प्रस्तुतियों की, जिसमें हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कक्षाएं सजव सौती में प्रदर्शन किए गये। इसी का एक भाग दिया। अलग-अलग में अलग-अलग, सुदूर अंग्रेजी, लोक इतिहास और भारतीय की वैज्ञानिक प्रस्तुतियों के साथ प्रदर्शन, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति में विदेशी मेहमानों ने शक्ति का प्रदर्शन। सांस्कृतिक कार्यक्रम में अलग-अलग कर के प्रदर्शन, राजस्थान व वेदों का प्रदर्शन भी रू।

हिन्दुस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

दैनिक हिंसार

20.02.2023

-----

-----

### अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन : हकृवि में आयोजित कल्चरल ईव में विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर लगाए तुमके

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशों से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में कल्चरल इवी कार्यक्रम का

कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में भारतीय संस्कृति से रूबरू करवाने हेतु सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। गानों पर जमकर तुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़हाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर-वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।



आयोजन हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बॉर्नर व डॉ. मेनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिब्वर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पौलैंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के. जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने डोल जगीरो दा व देशी

विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कत्थक, सूफी, भंगड़ा, फॉक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रूबरू करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेमी क्लासिकल डांस रहे।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Vision India News	19.02.2023	-----	-----



विश्वविद्यालय और हरियाणा कला परिषद के संयुक्त रूप से कलाकारों ने महाशिवरात्रि पर्व पर शिव स्तुति कर कार्यक्रम की शुरुआत की, जिसमें हरियाणा कला परिषद के कलाकार संजय सेठी ने सर्वप्रथम शिव नृत्य कर सभी का मन-मोह लिया। कलाकारों ने कल्थक, सूफी, भंगड़ा, फोक इंडियन डांस, रागनी की बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात व हरियाणा की संस्कृति से विदेशी मेहमानों से रुबरु करवाया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र भंगड़ा, राजस्थानी व सेनी प्लासिकल डांस रहे।

### Related

[हरियाणा के हिसार में क्यू कलाकारों का जापान आस्ट्रेलिया ब्रिटेन जर्मनी इजरायल, किरगिस्तान व पोर्तुगल सफ़र अनेक देश](#)

[जलियाँ जलवायु परिवर्तन व कृषि एक दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं  
February 17, 2023  
In 'Haryana'](#)

[श्री. कान्हाजी ने ये क्यू कला जलवायु परिवर्तन से कृषि के साथ आम-आदमी भी प्रभावित  
February 19, 2023  
In 'Haryana'](#)



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Vision India News	19.02.2023	-----	-----

## देखिए विदेशी मेहमानों ने देशी गानों पर हिसार में लगाए ठुमके

विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास बोर्नर व डॉ. लैनफेर्ड, कनाडा के प्रो. रविंद्र छिबबर, स्वीडन की डॉ. मोनिका बागा, पोलैंड के डॉ. लुकार्ज, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए.के. जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने दोल जगीरो दा व देशी गानों पर जमकर ठुमके लगाए, जिस पर तालियों की गड़गड़हाहट के साथ उपस्थित प्रतिभागियों ने वन्स मोर- वन्स मोर चिल्लाकर कार्यक्रम का लुत्फ उठाया।

@visionindia February 19, 2023 1 min read



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर मंथन चल रहा है, जिसमें विदेशी से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से रुबरू करवाने के लिए कृषि महाविद्यालय के ओडिटोरियम में कल्चरल डेवी कार्यक्रम का आयोजन हुआ।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
Vision India News	19.02.2023	-----	-----

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में 'जलवायु परिवर्तन के दौर में कृषि से खाद्य सुरक्षा और स्थिरता' विषय पर चर्चा चल रहा है। जिसमें विदेशी से आए वैज्ञानिकों को भारतीय संस्कृति से जवाब देने के लिए कृषि महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में कल्चरल ड्रों कार्यक्रम का आयोजन हुआ।



सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदेशी मेहमानों में जर्मनी के एंड्रयास थॉनेर व डॉ. जेनफेर्डे, कनाडा के प्रो. रविंद्र चिन्कर, स्वीडन की डॉ. मारिना बागा, ऑस्ट्रेलिया के डॉ. लुकाजे, आस्ट्रेलिया के डॉ. सूर्याकांत, डॉ. ए के जोशी, अमेरिका के डॉ. अशोक धवन सहित अन्य वैज्ञानिकों ने पंजाबी गाने दोल जंगीरी दा व देशी गानों पर जवाब देने के साथ-साथ...

